ISSN-0974-522X
R.N.I.-UPHIN /2008/30056
ISRA Journal Impact Factor-4.781
UGC Approved journal SL No. - 47966

# श्रीप्रभु pratibha

## Research Journal of Humanities

Intellectual effort on social values

A peer reviewed (Refereed) journal

Year-14, Volume-02, Part-55
April- June, 2022

Editor– Prabuddha Mishra
Co-editor– Pratibha Tiwari



Scanned with OKEN Scanner

श्रीप्रभु pratibhaPart-55,April-June-2022 pg-40-47
R.N.I-UPHIN/2008/30056, ISSN-0974-522X, JIF-4.781, UGC47966

# माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन

अरुण कुमार मिश्र एवं रंजना मिश्रा

**सारांश : माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन किया गया है।** समस्या के समाधान के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रयागराज शहर में संचालित दो राजकीय विद्यालयों (यू.पी.बोर्ड) का चयन किया गया। समस्या का अध्ययन करने के लिए विद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि से किया गया। छात्रों एवं छात्राओं के आंकड़ों के संकलन हेतु परीक्षण डॉ0 आर0डी0 सिंह एवं डॉ0 माधुरी सिंह द्वारा निर्मित हिन्दी परीक्षण (एच.ए.टी.) का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेपण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय विधि प्रयुक्त किया गया है। निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ है- माध्यमिक स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है। माध्यमिक स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है। माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि की तुलना में सार्थक अन्तर नही है।

**मुख्य शब्द-** माध्यमिक स्तर, छात्र-छात्राएँ, हिन्दी विषय, उपलब्धि, अन्तर।

**प्रस्तावना-**

वर्तमान समाज क्षण, प्रतिक्षण उत्थान के क्रान्तिकारी पथ पर अग्रसर है। जहाँ विज्ञान, मनोविज्ञान, सूचना प्रसारण एवं प्रौद्योगिकी का विकास समाज को वरावर प्रभवित कर रहा है। वही भारतीय संस्कृति भी विश्व समुदाय को प्रभावित करने में पीछे नहीं है। प्रकृति एवं पर्यावरण में बढ़ती हुयी असंतुलन, प्रदूषण, चाहे वह भौतिक, संस्कृतिक, नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक हो या अन्य सभी असंतुलनों के संरक्षण हेतु विश्व समुदाय भारत की वैदिक धरोहरों को वड़ी तेजी से अपने में आत्मसात कर लेने की प्रवृत्ति की ओर उन्मुख है।

वालक का सर्वांगीण विकास करने के लिए बालक की योग्यता, रूचि, मनोवृत्तियाँ आदि को आधार बनाया जाता है। वाल्यकाल में छात्र-छात्राओं पर सर्वाधिक प्रभाव हिन्दी भाषा का पड़ता है। अतः हिन्दी भाषा में उपलब्धि का अध्ययन आवश्यक है। जैसे हिन्दी भाषा नदी के जल के समान सदा चलती एवं वहती रहती है। जिस प्रकार से नदी के धरातल के अनुसार अपने स्वरूप को ग्रहण करता है, ठीक उसी प्रकार से हिन्दी भाषा भी देश, काल एवं सामाजिक परिस्थितियों के



Scanned with OKEN Scanner

अनुरूप अपना स्वरूप का विकास करती है। और हिन्दी भाषा के अपने आन्तरिक गुण या स्वभाव की भाषा की आवश्यकता होगी।

व्यापक राष्ट्रहित, राष्ट्रीय एकता तथा जन-सम्पर्क को दृष्टिगत रखते हुए स्वाधीन भारत के संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा स्वीकार किया गया है। यह देश की सांस्कृतिक एकता लोक, चेतना एवं सामाजिक सम्पर्क की भाषा है। शिक्षा में पारदर्शिता एवं वैज्ञानिक की होड़ में मूल्यांकन प्रक्रिया में परीक्षणों का विशेष महत्व है। स्वचालित पत्र क्रान्ति के समाज में अभिसिप्त सुनिश्चित परिवर्तन को साकार बनाने में हिन्दी भाषा सहायक होती है इसके लिए मापन आवश्यक है।

हिन्दी भाषा की कुल जनसंख्या के आधे से अधिक लोगों की भाषा है। यह भारत की जनभाषा, सम्पर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राज भाषा है। और देश की एकता और अखण्डता और उसके त्वरित विकास के लिए हमारे देश में हिन्दी भाषा का सर्वाधिक महत्व है। भारत के संविधान में हिन्दी को राष्ट्र-भाषा का स्थान दिया गया है। क्योंकि राष्ट्रीय एकता और भावात्मक एकता का प्रश्न प्रमुख था अंग्रेजों और अंग्रेजी का विरोध सभी ने किया और हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में सभी ने स्वीकार किया। हिन्दी में वे सभी गुण है जो एक राष्ट्र भाषा में होनी चाहिए हिन्दी सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा है। सभी प्रदेशों के निवासी इसे सरलता से बोधगम्य कर लेते है। हिन्दी का राष्ट्र-भाषा होना अधिक व्यावहारिक तथा गौरव की बात है। इसलिए हिन्दी का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है।

बच्चें स्वतन्त्र रूप से जो भी विचार करते है अपनी भाषा में करते है, इससे उनके व्यक्तित्व का विकास होता है। भाषा के माध्यम से ही वे सामाजिक व्यवहार और सामाजिक अन्तः प्रक्रिया करते है और इस प्रकार उनका सामाजिक विकास होता है। बच्चे प्रारम्भ में मातृभाषा-भाषी व्यक्तियों के ही सम्पर्क में आते हैं और उनसे भाषा में ही विचार विनिमय करते हैं। वे उन्हीं का अनुकरण करते है और उन्हीं के सामाजिक गुणों को ग्रहण करते है। हिन्दी का पाठ्य पुस्तकों में संकलित लेख, कहानी, नाटक और कविताओं के माध्यम से भी बच्चें को सामाजिकता की शिक्षा मिलती है। जो सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

बालक सबसे पहले अपनी मातृभाषा सीखता है और फिर उसके माध्यम से विचार-विनियम कर अपने समाज के व्यक्तियों के आचार-विचार को ग्रहण करता है। धीरे-धीरे वह लोकरीति सीखता है। बस यही से उसका सांस्कृतिक विकास शुरू हो जाता है। अपनी भाषा की शिक्षा के साथ-साथ बालक अपनी मातृभाषा के साहित्य



Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

का भी अपने समाज के इतिहास के दर्शन, सभ्यता एवं संस्कृति के दर्शन होते है और वह अपनी संस्कृति की मूल मान्यताओं विश्वासों और मूल्यों से परिचित होता हैं। वास्तविक यह है कि सांस्कृतिक महत्व के दो मूल आधार है- एक लोक जीवन और दूसरा लोक साहित्य।

आज वैज्ञानिक विकास तथा तकनीकी विकास ने विश्व के राष्ट्रों को एक दूसरे के अधिक समीप ला दिया है और कोई भी राष्ट्र अकेला रह कर जीवित नही रह सकता है। एक राष्ट्र की गतिविधियाँ अन्य राष्ट्रों को प्रभावित करती है। इसलिये विश्व के राष्ट्रों में सम्पर्क तथा विचारों का आदान-प्रदान करना आवश्यक हो गया है। इसके लिये एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है जिससे विश्व के राष्ट्र आपस में विचारों व नीतियों का आदान-प्रदान कर सके। जिस भाषा के माध्यम से एक देश दूसरे देश से अपने विचारों का आदान-प्रदान करने में सक्षम हो उसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा कहते है। विश्व के राष्ट्र आपस में सम्पर्क तथा विचारों का आदान-प्रदान करते है उसे विश्व की भाषा कहते है। 'संयुक्त राष्ट्र संघ' जो अन्तर्राष्ट्रीय संघ है उसमें विश्व के अधिकांश राष्ट्र मानवीय समस्याओं पर विचार-विमर्श करते है और समाधान ढुढ़ते है जिससे विश्व में शान्ति रह सके इसके लिए विश्व भाषा का प्रयोग किया जाता है।

**शोध के उद्देश्य-** प्रस्तुत अध्ययन कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है-

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों का हिन्दी विषय में उपलब्धि परीक्षण का अध्ययन।
2. माध्यमिक स्तर के छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

**परिकल्पना-**

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों का हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक होगी।
2. माध्यमिक स्तर के छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक होगी।
3. माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही होगा।

**अध्ययन की विधि-** समस्या के समाधान के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

**जनसंख्या और न्यादर्श-** प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रयागराज शहर में संचालित दो राजकीय विद्यालयों (यू.पी.बोर्ड) का चयन किया गया।

समस्या का अध्ययन करने के लिए विद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि से किया गया।

**उपकरण का वर्णन-** छात्रों एवं छात्राओं के आंकड़ों के संकलन हेतु परीक्षण डॉ0 आर0डी0 सिंह एवं डॉ0 माधुरी सिंह द्वारा निर्मित हिन्दी परीक्षण (एच.ए.टी.) का प्रयोग किया गया।

**प्रयुक्त सांख्यिकी विधि-** आँकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय विधि प्रयुक्त किया गया है-

**प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

**सारणी संख्या- 1**

**छात्रों का मध्यमान व मानक विचलन**

| CI | f | Cf | d | fd | | $fd^2$ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 80-84 | 2 | 50 | +5 | 10 | +54 | 50 |
| 75-79 | 3 | 48 | +4 | 12 | | 48 |
| 70-74 | 6 | 45 | +3 | 18 | | 54 |
| 65-69 | 6 | 39 | +2 | 12 | | 24 |
| 60-64 | 2 | 33 | +1 | 2 | | 2 |
| 55-59 | 10 | 31 | 0 | 0 | | 0 |
| 50-54 | 9 | 21 | -1 | 9 | -39 | 9 |
| 45-49 | 8 | 12 | -2 | -16 | | 32 |
| 40-44 | 2 | 4 | -3 | -6 | | 18 |
| 35-39 | 2 | 2 | -4 | -8 | | 32 |
| i=5 | N=50 | | | □ fd=15 | | □ $fd^2$=269 |

मध्यमान = 58.5 मानक विचलन = 9.069

**सारणी सं0 2**

**छात्राओं का मध्यमान व मानक विचलन**

| CI | f | Cf | d | fd | | $fd^2$ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 80-84 | 3 | 50 | +3 | 9 | +28 | 27 |
| 75-79 | 3 | 47 | +2 | 6 | | 12 |
| 70-74 | 13 | 44 | +1 | 13 | | 23 |
| 65-69 | 9 | 31 | 0 | 0 | -66 | 0 |
| 60-64 | 6 | 22 | -1 | -6 | | 6 |
| 55-59 | 3 | 16 | -2 | -6 | | 12 |
| 50-54 | 5 | 13 | -3 | -15 | | 45 |
| 45-49 | 3 | 8 | -4 | -12 | | 48 |
| 40-44 | 3 | 5 | -5 | -15 | | 75 |
| 35-39 | 2 | 2 | -6 | -12 | | 72 |
| i=5 | N=50 | | | □ fd=15 | | □ $fd^2$=310 |

मध्यमान = 63.2 मानक विचलन = 2-11

**उद्देश्य-** माध्यमिक स्तर के छात्रों का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन।



Scanned with OKEN Scanner

**परिकल्पना-1**

माध्यमिक स्तर के छात्रों का हिन्दी विषय में उपलब्धि सरकारात्मक होगी।

इस परिकल्पना के निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए 'हिन्दी विषय में उपलब्धि परीक्षण' द्वारा प्रयागराज शहर के काली प्रसाद इण्टर कालेज के हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन किया गया। छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान निकाला गया है। प्राप्त परिणाम का निष्कर्ष इस प्रकार है।

**छात्रों के उपलब्धि का अध्ययन-**

**सारणी संख्या-3**

| क्र. सं. | चयनित छात्रों की संख्या | मध्यमान | छात्रों की संख्या | प्रतिशत | सकारात्मक/ नकारात्मक |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 50 | 58.5 | 26 | 52% | सकारात्मक |
| | | | 24 | 48% | नकारात्मक |

सारणी संख्या 3 में दिये गये परिणाम से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान 58.5 है। 52 प्रतिशत छात्रों ने मध्यमान से ऊपर अंक प्राप्त किये है तथा 48 प्रतिशत छात्रों ने मध्यमान से नीचे अंक प्राप्त किये है मानक के अनुसार मध्यमान से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की उपलब्धि सकारात्मक है तथा मध्यमान से नीचे अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की उपलब्धि नकारात्मक है। इससे पता चलता है कि सकारात्मक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत अधिक है अतः हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है।

**उद्देश्य-** माध्यमिक स्तर के छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन।

**परिकल्पना-2**

माध्यमिक स्तर के छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि सरकारात्मक होगी।

इस परिकल्पना के निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए 'हिन्दी विषय में उपलब्धि परीक्षण' द्वारा प्रयागराज शहर के राजकीय बालिका इण्टर कालेज के हिन्दी विषय में उपलब्धि का अध्ययन किया गया। छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान निकाला गया है। प्राप्त परिणाम का निष्कर्ष इस प्रकार है।

**छात्राओं के उपलब्धि का अध्ययन-**

**सारणी संख्या-4**

| क्र.सं. | चयनित छात्राओं | मध्यमान | छात्राओं | प्रतिशत | सकारात्मक/ |
|---|---|---|---|---|---|



Scanned with OKEN Scanner

| | की संख्या | | की संख्या | | नकारात्मक |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 50 | 63.2 | 31 | 62% | सकारात्मक |
| | | | 19 | 38% | नकारात्मक |

सारणी संख्या 4 में दिये गये परिणाम से स्पष्ट है कि छात्रों का मध्यमान 63.2 है। 62 प्रतिशत छात्राओं ने मध्यमान से ऊपर अंक प्राप्त किये है तथा 38 प्रतिशत छात्राओं ने मध्यमान से नीचे अंक प्राप्त किये है मानक के अनुसार मध्यमान से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले छात्राओं की उपलब्धि सकारात्मक है तथा मध्यमान से नीचे अंक प्राप्त करने वाले छात्राओं की उपलब्धि नकारात्मक है। इससे पता चलता है कि सकारात्मक अंक प्राप्त करने वाले छात्राओं का प्रतिशत अधिक है। अतः हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है।

**उद्देश्य-** माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में तुलनात्मक अध्ययन।

**परिकल्पना-3**

माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही होगा।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए प्रयागराज शहर के राजकीय विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं से संकलित प्रदत्तों पर टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन का निष्कर्ष निम्न तालिका द्वारा प्रदर्शित है।

**सारिणी संख्या 5**

| प्रतिदर्श | n | M | S.D. | D | $\sigma_D$ | df | t | सारणीमान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 50 | 58-5 | 9-069 | 2-786 | 2-11 | 98 | 1-32 | $t_{.05}$=1.98 | सार्थक अन्तर अस्वीकृत है। |
| छात्राएं | 50 | 63-2 | 11-855 | | | | | $t_{.01}$=2.36 | |

इस अध्ययन में df 98 पर सारणी 4.3 में टी का मान 0.05 जो सारणी के .05 व .01 सारणी के मान से कम है। अतः छात्रों एवं छात्राओं की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही होगा सारणी 3 तथा सारणी 4 के मध्यमान की तुलना करने पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि सारणी 4 का मध्यमान सारणी 4 के औसत से कम



Scanned with OKEN Scanner

है। इसलिए यह स्वीकार किया गया कि हिन्दी विषय में छात्रों की उपलब्धि छात्राओं की उपलब्धि से कम है अतः यह परिकल्पना स्वीकार की गई की हिन्दी विषय के छात्र-छात्राओं के उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

**अध्ययन के निष्कर्ष-**

निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ है-

- माध्यमिक स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है।
- माध्यमिक स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में उपलब्धि सकारात्मक है।
- माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं का हिन्दी विषय में उपलब्धि की तुलना में सार्थक अन्तर नही है।

**आगामी अध्ययन के सुझाव-**

प्रस्तुत अध्ययन में छात्रों एवं छात्राओं के समुहों का चयन केवल छात्रों एवं छात्राओं के हिन्दी विषय में उपलब्धि को जानने के लिए ही किया गया है लेकिन हो सकता है कि यह उपलब्धि कई कारणों से प्रभावित हुई है जैसे माता-पिता का अभाव, सुविधायुक्त व सुविधारहित वातावरण आदि जिनको इस अध्ययन में सम्मिलित नही किया गया है। अतः आगामी अध्ययनों में इस बात की आवश्यकता है कि इस प्रकार के अन्य कारणों को भी ध्यान में रखा जये।

- हिन्दी विषय में उपलब्धि के अध्ययन के लिए आगामी अध्ययनों में छात्रों एवं छात्राओं के समूह के चयन के लिए और भी बड़े न्यादर्श को लिया जा सकता है।
- इसी प्रकार का अध्ययन माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों पर भी किया जा सकता है।
- यह अध्ययन केवल शहरी क्षेत्र की छात्रों एवं छात्राओं पर ही किया गया है ऐसा अध्ययन ग्रामीण छात्रों एवं छात्राओं पर भी किया जा सकता है।
- यह अध्ययन केवल हिन्दी विषय पर ही किया गया है इसे और अन्य विषय पर भी किया जा सकता है।

**सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-**


1. बुच, एम0बी0, थर्ड सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, वाल्यूम-1, नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0, 1983, पृ0सं0 648.
2. बुच, एम0बी0, फोर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, वाल्यूम-2, नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0, 1983, पृ0सं0 1274- 1302.
3. एस0सी0ई0, रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 1988, वाल्यूम-2.
4. सिंह सल्वीर, अरोरा ओ0पी0 और त्रेहनमंजू, फिफ्थ सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च, 1990, वाल्यूम-2
5. सिंह, आर0टी0, एस0पी0 वर्मा, एस0के0, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 1991, वाल्यूम-2
6. पटनायक, एस0पी0 एवं मोनाहन, ए0के0, सिक्सथ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 1993, वाल्यूम-1
7. हार्था, उर्मिल एच0, सिक्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसार्च (1992-2000), 1994, वाल्यूम-1




Scanned with OKEN Scanner

8. सिंह, बसन्त बहादुर, सिक्थ सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च (1992-2000), 1994, वाल्यूम-1
9. गुप्त, रामबाबू, भारतीय शिक्षा का इतिहास, इलहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, संस्करण-प्रथम, 1995, पृष्ठ सं0 15-23
10. गुप्ता, एस0पी0, शिक्षा का ताना-बाना, नई दिल्ली : शारदा पुस्तक भवन, संस्करण-द्वितीय, 1998, पृष्ठ संख्या- 253-260
11. जैन, डॉ0 बी.एम., रिसर्च मैथ्डोलॉजीः रिसर्च पब्लिकेशन्स, 2000, जयपुर
12. बुच, एम0बी0, सिक्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन, वाल्यूम-2, नई दिल्ली : एन0सी0ई0आर0टी0, 2000, पृ0सं0 1274-1302
13. गुप्ता एस0पी0, गुप्ता अलका, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान : शारदा प्रकाशन, 11 यूनिवर्सिटी रोड, प्रयागराज, 2003, पृष्ठ सं0 432
14. कपिल, एच0के0, अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारिक विज्ञान में), आगरा एच0पी0 भार्गव बुक हाउस, 2001, पृष्ठ सं0 37-39
15. चतुर्वेदी शिखा, "हिन्दी शिक्षण" आर0लाल बुक डिपो प्रकाशन, मेरठ, 2003, पेज नं0 3
16. गारेट, हेनरी, शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के प्रयोग, नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिकेशन, 2003, पृ0सं0 62
17. गुप्ता, एस0पी0, सांख्यिकीय विधियाँ, प्रयागराज शारदा पुस्तक भवन, 2003, पृ0सं0 203-233
18. लाल, रमन बिहारी, भारतीय शिक्षा का इतिहास मेरठ,रस्तोगी पब्लिकेशन्स, 2004, पृ0सं0 135-146
19. लाल रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेशन्स, संस्करण सोलहवां, 2005, पृष्ठ सं0 1-25
20. भटनागर, आर0पी0 एवं भटनागर मीनाक्षी, शिक्षा अनुसंधान, मेरठ5 इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2005, पृ0सं0 116-141
21. माथुर एस0एस0, शिक्षा मनोविज्ञान, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, 2205, पृ0सं0 573-584
22. पाण्डेय, रामशकल, भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यायें आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृ0 संख्या, 2006, 80, 99
23. सक्सेना, एन0आर0, फंडामेंडल ऑफ एजुकेशल रिसर्च, मेरठ, विनय रखेजा, 2006, पृ0सं0 358-369

**डॉ0 अरुण कुमार मिश्र**
**शोध निर्देशक, असिस्टेन्ट प्रोफेसर**
**रंजना मिश्रा**
**शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)**
**शिक्षाशास्त्र विभाग**
**नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।**



Scanned with OKEN Scanner